तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं की गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय),
दयालबाग़, आगरा से संगीत में पीएच.डी. की
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित
रूपरेखा

शोध–निर्देशिका

प्रो० सुधा सहगल
संगीत विभाग, (गायन)

शोधार्थिनी

अर्षा सत्संगी
संगीत विभाग, (गायन)

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय),
दयालबाग़, आगरा – 282005

2020

तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं की गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका–

तसव्वुफ एक ऐसी परम्परा है जिसका प्रतिपादन सूफियों के सिद्धान्तों द्वारा किया गया है जिसे साधारणतय सूफीवाद, सूफीमत, सूफीधारा व सूफियाना भी कहा जाता है। सूफीमत में सदैव खुदा का गुणगान, सब जीवों में खुदा का अंश, बाहय आडंबरों का विरोध, नश्वर संसार से वैराग्य, पाखंडों का त्याग तथा सादा जीवन व उच्च विचार जैसे सिद्धान्तों का उपदेश दिया है। इस सभी सिद्धान्तों के साथ–साथ सूफीमत में सूफियों ने अपनी अर्ज़, विनय, प्रार्थना को खुदा के समक्ष रखने के लिए सदा संगीत का आश्रय लिया जिसके फलस्वरूप कई गायन शैलियाँ अस्तित्व में आई जैसे कौल, सूफियाना कलाम, हम्द, नात, कलवाना, गुल, नक्श, फर्द, गज़ल, रेख्ता, मसनवी इत्यादि।

तसव्वुफ परम्परा को सूफियों की परम्परा कहा जाता है जिसका सम्बन्ध सूफियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों, विचारों एवं साहित्य से है। सूफी परम्परा में चार परम्पराएँ प्रसिद्ध मानी गई है–

1 सुहरावर्दी परम्परा

2 चिश्ती परम्परा

3 कादिरी परम्परा

4 नक्शबंदी परम्परा।

इन सभी परम्पराओं में से चिश्ती परम्परा में संगीत को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। अन्य परम्पराओं में संगीत को उतना महत्व नहीं दिया गया जितना चिश्ती में दिया गया है। सभी तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं में सिद्धान्त तो एक समान ही है किन्तु संगीत के संदर्भ में जितना चिश्ती सम्प्रदाय अथवा परम्परा जुड़ी है उतना किसी अन्य परम्परा ने संगीत को आत्मसात नहीं किया।

पूर्वोक्त तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं की गायन शैलियों में राग–प्रयोग, बोल–आलाप, बोल–बनाव, कहन, तान–प्रयोग, बोलतान प्रयोग तथा सौन्दर्यात्मक तत्वों जैसे कण, खटका, मींड, मुर्की का प्रयोग प्राबल्य से दृष्टिगोचर होता है। विभिन्न रागों जैसे यमन, काफी, बिहाग, शहाना, मांझ, खमाज, गारा, सूहा, देसी, मल्हार इत्यादि में अनेक रचनाएँ सुनने को मिल जाती है तथा विभिन्न तालें जैसे– दादरा, तीनताल, दीपचंदी, कहरवा, चांचर इत्यादि भी अत्यंत सामंजस्य के साथ इन गायन शैलियों को

चमत्कारिकता से भर देती है। ये सभी गायन शैलियाँ तसव्वुफ प्रधान परम्परा के समृद्ध सांगीतिक ज्ञान व कला का दर्पण है। इन गायन शैलियों को मस्जिदों, ख़ानक़ाहों, दरगाहों में तो व्यवहस्त किया ही जाता है, उनके अतिरिक्त व्यक्तिगत व सामूहिक स्तर पर भी ये गायन शैलियों को उत्कृष्ट रूप में ऊर्स अथवा अन्य धार्मिक पर्वों में गाया जाता है। वर्तमान में ये गायन शैलियाँ किसी पर्व या समारोह का कवरेज करने वाली दूरदर्शन, अथवा टी०वी० चैनल्स, रिकॉर्डिंग के द्वारा सुनने को प्राप्त हो जाती है तो साधारण जनमानस को तो भाव–विभोर करती ही है साथ ही साथ संगीत के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए तो ये गायन शैलियाँ कलापूर्ण, रचनाधर्मिता–सम्पन्न, गायन–कौशल से समृद्ध, रागों के सूक्ष्म प्रयोगों से ओत–प्रोत, ताल वैविध्य से परिपक्व ऐसी मिसाल है जिन्हें सुनना न केवल भाव–विभोर होना है अपितु उनके अंतर्गत समाहित अनेक विशिष्टताओं को जानना, सीखना, गहन अध्ययन करना उत्कंठा का विषय है।

चूँकि शोधार्थिनी स्वयं संगीत की छात्रा है एवं संगीत के क्रियात्मक, प्रयोगात्मक तथा विविधतापूर्ण गायन शैलियों को सीखने की प्रबल इच्छा रखती है। अतः इतनी समृद्ध गायन शैलियों पर शोध का कार्य करने तत्पर हुई है।

प्रस्तावित शोध को संचालित करने से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है–

पुस्तकें –

1 Sufism- An account of the Mystics of Islam- A.J. Arberry; cosmo Publications, New Delhi, 2003
2 Sufi Saints and Mysticism- Sadhu Santideva; Cosmo Publications, New Delhi, 2000
3 Sufi Thought- S.R. Sharda, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 1975
4 Sufism- Its Saints and Shrines- John A subham, Cosmo Publications, New Delhi, 1999
5 Sufism in India and central Asia- Nasir Raza Khan, Manakin Press Pvt. Ltd., 2017
6 सूफ़ी धर्म एवं मान्यताएँ– Dr. Rameshwar Mishra, Kalyani Prakashan- Daryaganj, New Delhi
7 Sufi Saints of Kashmir; Sufi Orders in Kashmir- Sayid Ashraf Shah, Partridge India, 2014
8 Sufism : A Beginner’s Guide- William C Chittick, Oneworld Publication, 2007

9 Sufism and Religions Brotherhoods in Senegal- Khadim M backe; Markus wiener Publishers, 2005

10 The Sufis- Idries Shah; The octagon Press, London, 1977

11 The way of the sufi- Idries Shah, The idries Shah Foundation ISF Publications, 1968-2015

12 Striving for Divine Union- Spiritual Exercises for suhrawardi Sufis- Qamar-ul-huda, Routledge Curzon publishers, 2003

शोध प्रबन्ध–

1 सूफ़ी और संत काव्य में गुरु सम्बन्धी परिकल्पना, कुमार अशोक (पी.एच.डी.), पंजाब यूनिवर्सिटी, 2002

2 The Sufi element in Emerson and Thoreau- Ali Arian (Phd); University of Pune- January 2010

3 सूफ़ी प्रेममार्गी काव्यों में सांस्कृतिक जीवन– Dubey Mukesh kumar (Phd); Deen Dayal Upadhyaya, Gorakhpur University

4 Sufi Tradition and culture – A study of Sufi Saints and growth of syncretic Shrines in medieval north East India, Uz Zaman, Mohd Assad- Assam University , 2006

5 Sufism in India in the present context- karar, suihir Chandra, University of Calcutta, 1975

6 Sufism in the deccan early phase- Mirza, khizar, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, 1987

पत्र–पत्रिकाएं–

1 ''सूफ़ी गायकी की परम्परा के महान् गायक बाबा सरदारा'', उदयराज सिंह ठाकुर, संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष–18, अंक–8, अगस्त 2003

2 ''सूफी संगीत : नई रोशनी'', तोयज कुमार सिंह, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष–79, अंक–10, अक्टूबर 2014

3 ''उर्दू भाषा की प्रमुख सांगीतिक काव्य–शैलियाँ'', डॉ० सुधा सहगल, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष 69, अंक–12, दिसम्बर 2003

4 Changing Music and verse modes of sufiyana kalama- UGC, Minor research report, Dr. Sudha Sahgal, Dayalbagh Educational Institute, Agra.

पूर्वोक्त सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि तसव्वुफ प्रधान गायन शैलियों पर कोई भी सामग्री प्राप्त नहीं होती। जिन पुस्तकों में सूफी मत पर विवरण प्राप्त होते हैं उनमें केवल तसव्वुफ प्रधान सिद्धान्तों, विचारों एवं शिक्षाओं की ही चर्चा की गई है। गायन शैलियों में प्रयुक्त होने वाले राग–प्रयोग, विशिष्ट स्वर–प्रयोग, आलापचारी तथा विभिन्न सौन्दर्यात्मक तत्वों की कहीं कोई चर्चा नहीं है। यदि कहीं गायन शैलियों के नाम का उल्लेख है तो वहाँ केवल साहित्य ही प्राप्त होता है। गायन के क्रियात्मक पक्ष पर कोई भी पुस्तक, शोध प्रबन्ध, पत्र–पत्रिकाओं में गायन से सम्बन्धित कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होते।

कतिपय लघु शोध प्रबन्ध संगीत विभाग दयालबाग शिक्षण संस्थान में पूर्ण किए गए हैं–

1 फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी कव्वाल घराने में व्यवहृत रागों एवं बंदिशों का अध्ययन– कु० नीलम (एम.ए., उत्तरार्द्ध, संगीत गायन), 2012

2 फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी कव्वाल घराने में व्यवहृत अल्प प्रचलित गायन शैलियों का अध्ययन, कु० नीलम (एम.फिल.), उत्तरार्द्ध, संगीत गायन), 2013

इन सभी लघु शोध प्रबन्धों में गायन शैलियों का उल्लेख तो हुआ ही है साथ ही साथ सांगीतिक पक्षों पर भी उल्लेख एवं शोध परख विश्लेषण हुआ है। किन्तु शोध के लघु होने के कारण इनमें निहित सामग्री अल्प है तथा किसी–किसी गायन शैली पर ही कार्य हुआ है जो कि प्रस्तावित शोध के लिए पर्याप्त नहीं है। इन लघु शोध प्रबन्धों के द्वारा शोधकर्त्री को विषय से सम्बन्धित किंचित दिशा तो मिलेगी किन्तु पर्याप्त सामग्री के अभाव में विभिन्न गायन शैलियों पर शोध कार्य करना पूर्णतः नवीन ही होगा।

अतः तसव्वुफ प्रधान गायन शैलियों का गहन अध्ययन करने क्रियात्मक पक्षों को समझने व सीखने, सांगीतिक तत्वों से परिपक्व गायन शैलियों का सूक्ष्म निरीक्षण करने हेतु शोधकर्त्री ने निम्न विषय का चयन किया है।

विषय कथन–

विषय– तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं की गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

अध्ययन की आवश्यकता

तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं में खुदा से प्रेम, प्राणीमात्र से सद्भावना, संसार की नश्वरता, मानवीय राग–द्वेषों, सत्य का पालन तथा बाहय आडम्बरों इत्यादि जैसे तत्वों को सिद्धान्त की भाँति उजागर किया जाता है। साथ ही साथ चिश्ती परम्परा व नक्शबंदी परम्पराओं में तो सूफी सिद्धान्त संगीत के साथ ही मिश्रित किए जाते हैं अथवा सिद्धान्तों को सांगीतिक स्वरूप देकर और अधिक प्रभावशाली बना दिया जाता है। हम्द, नात, फ़र्द, गुल, मनक़बत, कव्वाली जैसी विधाएँ ''सभा'' (सांगीतिक सभा) की जाती है जिनमें रागों व तालों का अद्भुत प्रयोग रहता है।

उपर्युक्त उल्लिखित गायन विधाओं को केवल साहित्यिक उल्लेख प्राप्त होते हैं। सांगीतिक दृष्टि से किसी भी गायन शैली को प्रकाश में नहीं लाया गया है। अतः इन गायन शैलियों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। इनमें समाहित रागों व तालों को भी स्वरलिपि के माध्यम से संरक्षित करने की आवश्यकता है।

अध्ययन के महत्व–

प्रस्तावित शोध तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं में निहित संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। सभी सिद्धान्तों के सांगीतिक प्रयोगों को सम्बन्धित करने की दृष्टि से भी शोध का महत्वपूर्ण योगरस होगा।

जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में आने वाली युवा पीढ़ी को दिशा प्राप्त होगी, इस ओर भी शोध का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य होगा।

अध्ययन के उद्देश्य–

- तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं का इतिहास जानना।
- चिश्ती परम्परा का इतिहास व विकास का अध्ययन करना।
- चिश्ती परम्परा में संगीत का निरीक्षण करना।
- चिश्ती परम्परा में व्यवहृत गायन शैलियों का अध्ययन करना।
- चिश्ती परम्परा की गायन शैलियों में रागों व तालों का सूक्ष्म निरीक्षण करना।
- चिश्ती परम्परा की गायन शैलियों का विश्लेषण करना।

- विभिन्न विद्वानों व कलाकारों द्वारा साक्षात्कार कर चिश्ती परम्परा का सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक अध्ययन करना।

विषय का परिसीमांकन–

कार्य व अवधि की सीमा को देखते हुए शोध कार्य केवल चिश्ती परम्परा के दो केन्द्रों तक ही सीमित किया जाएगा।

अध्ययन के स्त्रोत–

अध्ययन हेतु विभिन्न पुस्तकालयों जैसे दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), आगरा, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा विभिन्न अक़ादमियों जैसे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, संगीत नाटक अकादमी दिल्ली से शोध हेतु साम्रगी एकत्रित की जाएगी। साथ ही साथ चिश्ती सम्प्रदाय की प्रमुख दरगाहों एवं विद्वानों, संगीतकारों व कलाकारों से भी सामग्री एकत्रित की जाएगी।

कार्यविधि उपकरण –

प्रस्तावित शोध को संचालित करने हेतु व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। विभिन्न शोध उपकरणों जैसे प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार का प्रयोग किया जाएगा। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, लैपटॉप, विडीयो कैमरा, मोबाइल आदि का प्रयोग किया जाएगा। सांगीतिक उपकरणों जैसे हारमोनिम, तबला, ढोलक, इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा का भी प्रयोग किया जायेगा।

अध्यायों का विभाजन–

प्रथम अध्याय

(i) तसव्वुफ–परिचय, इतिहास, विकास व परम्पराएँ।

(ii) प्रमुख परम्पराएँ

द्वितीय अध्याय

(i) चिश्ती परम्परा व तसव्वुफ ऐतिहासिक परिचय।

(ii) चिश्ती परम्परा का सांगीतिक अनुशीलन व विकास।

तृतीय अध्याय

(i) चिश्ती परम्परा की तसव्वुफ प्रधान प्रचलित गायन शैलियाँ।

(ii) चिश्ती परम्परा की तसव्वुफ प्रधान अप्रचलित गायन शैलियाँ।

चतुर्थ अध्याय

चिश्ती परम्परा की तसव्वुफ प्रधान गायन शैलियों का वर्तमान स्वरूप व विश्लेषण।

पंचम अध्याय

चिश्ती परम्परा की गायन शैलियों का स्वरलिपिबद्ध संकलन।

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

प्रस्तावित शोध की रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विशेषज्ञों, विद्वानों, कलाकारों से पूछे गए प्रश्न–

1 तसव्वुफ क्या है?

2 तसव्वुफ में सूफी संगीत क्या है?

3 सूफी संगीत का इतिहास व विकास कैसे हुआ?

4 प्रसिद्ध तसव्वुफ प्रधान परम्पराओं में संगीत की स्थिति क्या है?

5 सूफी संगीत का इतिहास क्या है?

6 तसव्वुफ प्रधान गायन शैलियों में कौन–कौन से रागों को प्राथमिकता दी जाती है?

7 तसव्वुफ प्रधान गायन शैली में सांगीतिक रचनाओं को कैसे निर्मित किया जाता है?

8 गायन व वादन का मिश्रिण इन शैलियों में कैसे होता है?

9 इन गायन शैलियों में रागों के चयन का सिद्धान्त क्या है?

10 सूफी परम्परा में सबसे प्रसिद्ध मानी गई चिश्ती परम्परा क्या है?

11 चिश्ती परम्परा का इतिहास क्या है?

12 चिश्ती परम्परा अस्तित्व में कब आई?

13 चिश्ती परम्परा में संगीत की स्थिति क्या है?

14 चिश्ती परम्परा का सांगीतिक स्वरूप क्या है?

15 क्या आज भी चिश्ती परम्परा का पालन किया जा रहा है?

16 चिश्ती परम्परा में कौन सी गायन शैलियाँ प्रमुख है?

17 चिश्ती परम्परा के अतिरिक्त और कौन–कौन सी परम्पराओं को अस्तित्व में लाया गया?

18 चिश्ती परम्परा में व्यवहृत गायन शैलियों को कौन–कौन से पर्वों में गाया जाता है?

19 गायन शैलियों में साहित्य–निर्माण किस प्रकार होता है?

20 क्या समय सिद्धान्त का प्रयोग इन गायन–शैलियों में होता है?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

पुस्तकें –

1 Sufism- An account of the Mystics of Islam- A.J. Arberry; cosmo Publications, New Delhi, 2003

2 Sufi Saints and Mysticism- Sadhu Santideva; Cosmo Publications, New Delhi, 2000

3 Sufi Thought- S.R. Sharda, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 1975

4 Sufism- Its Saints and Shrines- John A subham, Cosmo Publications, New Delhi, 1999

5 Sufism in India and central Asia- Nasir Raza Khan, Manakin Press Pvt. Ltd., 2017

6 सूफ़ी धर्म एवं मान्यताएँ– Dr. Rameshwar Mishra, Kalyani Prakashan- Daryaganj, New Delhi

7 Sufi Saints of Kashmir; Sufi Orders in Kashmir- Sayid Ashraf Shah, Partridge India, 2014

8 Sufism : A Beginner's Guide- William C Chittick, Oneworld Publication, 2007

9 Sufism and Religions Brotherhoods in Senegal- Khadim M backe; Markus wiener Publishers, 2005

10 The Sufis- Idries Shah; The octagon Press, London, 1977

11 The way of the sufi- Idries Shah, The idries Shah Foundation ISF Publications, 1968-2015

12 Striving for Divine Union- Spiritual Exercises for suhrawardi Sufis- Qamar-ul-huda, Routledge Curzon publishers, 2003

शोध प्रबन्ध–

1 सूफ़ी और संत काव्य में गुरु सम्बन्धी परिकल्पना, कुमार अशोक (पी.एच.डी.), पंजाब यूनिवर्सिटी, 2002

2 The Sufi element in Emerson and Thoreau- Ali Arian (Phd); University of Pune- January 2010

3 सूफ़ी प्रेममार्गी काव्यों में सांस्कृतिक जीवन– Dubey Mukesh kumar (Phd); Deen Dayal Upadhyaya, Gorakhpur University

4 Sufi Tradition and culture – A study of Sufi Saints and growth of syncretic Shrines in medieval north East India, Uz Zaman, Mohd Assad- Assam University , 2006

5 Sufism in India in the present context- karar, suihir Chandra, University of Calcutta, 1975

6 Sufism in the deccan early phase- Mirza, khizar, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, 1987

पत्र–पत्रिकाएं–

1 ''सूफ़ी गायकी की परम्परा के महान् गायक बाबा सरदारा'', उदयराज सिंह ठाकुर, संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष–18, अंक–8, अगस्त 2003

2 ''सूफी संगीत : नई रोशनी'', तोयज कुमार सिंह, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष–79, अंक–10, अक्टूबर 2014

3 ''उर्दू भाषा की प्रमुख सांगीतिक काव्य–शैलियाँ'', डॉ० सुधा सहगल, संगीत कार्यालय, हाथरस, वर्ष 69, अंक–12, दिसम्बर 2003

4 Changing Music and verse modes of sufiyana kalama- UGC, Minor research report, Dr. Sudha Sahgal, Dayalbagh Educational Institute, Agra.

5 फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी कव्वाल घराने में व्यवहृत रागों एवं बंदिशों का अध्ययन– कु० नीलम (एम.ए., उत्तरार्द्ध, संगीत गायन), 2012

6 फतेहपुर सीकरी के सूफ़ी कव्वाल घराने में व्यवहृत अल्प प्रचलित गायन शैलियों का अध्ययन, कु० नीलम (एम.ए.), उत्तरार्द्ध, संगीत गायन), 2013

7 http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/

8 http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00os

9 सयीद, मियां मुहम्मद, 1972, द शर्की सल्तनत ऑफ़ जौनपुर, द इंटर सर्विसेज प्रेस लिमिटेड